TLPS | Teaching Learning Practices Survey

Anchored by LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION
Strong Foundation, Stronger Future

Supported by TATA TRUSTS

टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे - उत्तर प्रदेश

भारत में एफएलएन शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को सशक्त करने के लिए एक अध्ययन

2025 | सारांश

TLPS 2025

टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे 2025, उत्तर प्रदेश

दिसम्बर 2025

सहयोग: टाटा ट्रस्ट

क्रियान्वयन में भागीदार: लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन (एलएलएफ)

मूल्यांकन भागीदार: एजुकेशनल इनिशिएटिव्स (ईआई)

सरकारी भागीदार: उत्तर प्रदेश सरकार

इस रिपोर्ट में उपयोग में लाए गए समस्त चित्र लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन द्वारा लिए गए हैं।

डिजाइन एवं सम्पादन: न्यू कन्सेप्ट इनफॉर्मेशन सिस्टम्स, नई दिल्ली।

आवरण की डिजाइन: आकाश भगत

LLF वेबसाइट **https://languageandlearningfoundation.org/** पर यह रिपोर्ट उपलब्ध है।

इस रिपोर्ट के किसी भी अंश का उपयोग उचित अनुमोदन के साथ अव्यावसायिक उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

सुझावित संदर्भ:
लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन. (2025). *टीचिंग लर्निंग प्रैक्टिस सर्वे 2025. उत्तर प्रदेश*
https://languageandlearningfoundation.org/teaching-learning-practices-survey/

निम्न संस्था द्वारा प्रकाशित:
लैंग्वेज एण्ड लर्निंग फाउंडेशन
पहला तल, ब्लाक बी, 8, गुरु रविदास मार्ग
बालाजी एस्टेट, कालकाजी
नई दिल्ली -110019

कार्यकारी सारांश

परिचय

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (नेशनल एजुकेशन पॉलिसी - एनईपी) 2020 ने देश की शिक्षा पद्धति में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (फाउंडेशनल लिटरेसी एंड न्यूमेरेसी या एफएलएन) को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। इस फोकस को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-बुनियादी स्तर (एनसीएफ-एफएस 2022) ने और भी मजबूत किया है। इस विजन को प्राप्त करने के लिए भारत सरकार ने स्पष्ट अधिदेश के साथ निपुण भारत मिशन शुरू किया है। ये अधिदेश है- 2026-27 तक सभी बच्चों को सार्वभौमिक एफएलएन का लक्ष्य प्राप्त करना है। इससे सभी राज्यों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) को और बेहतर बनाने के प्रयासों को बढ़ावा मिला है।

उत्तर प्रदेश में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान में दक्षता हेतु राष्ट्रीय पहल (निपुण भारत) के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक प्रणालीगत परिवर्तन की शुरुआत की गई है। इस मिशन का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आधारभूत वर्षों (बालवाटिका से कक्षा 2 तक तथा कक्षा 3 के लिए भी समान प्रयासों के साथ) का प्रत्येक बच्चा अपेक्षित अधिगम दक्षताओं को प्राप्त करे। यह रणनीति बहु-स्तंभीय दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसमें अधोसंरचना का निर्माण, राज्य से संकुल स्तर तक समर्पित अकादमिक कैडर की स्थापना तथा मध्य प्रबंधन के नेतृत्व एवं टीम निर्माण क्षमताओं का संवर्धन शामिल है।

टीएलपीएस 2025 के बारे में

कक्षा 1 और 2 में भाषा और गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं पर व्यवस्थित साक्ष्य देने के लिए टीएलपीएस 2025 की परिकल्पना की गई थी। प्रारंभिक कक्षाओं के विविध संदर्भों में इन शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की जाँच करते हुए सर्वे यह दर्शाता है कि बच्चों की सीखने की सामग्री, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम और अकादमिक मदद से शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं में क्या परिवर्तन हो रहा है। यह सर्वे अवलोकित कक्षाओं में वर्तमान शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं की स्थिति को दिखाता है और साथ ही यह भी बताता है कि शिक्षा प्रणाली के स्तर पर किए जा रहे प्रयासों से कक्षाओं में किस हद तक शैक्षणिक बदलाव हो रहे हैं और किन क्षेत्रों में अतिरिक्त सुधार की आवश्यकता है।

उत्तर प्रदेश में यह सर्वे नवंबर-दिसम्बर 2024 में किया गया था। इस सर्वे में चार जिलों (बहराइच, रायबरेली, मिर्जापुर और बरेली) के 200 स्कूल शामिल थे।

निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

इस सर्वे में निम्न विषयों पर निष्कर्ष प्रस्तुत किये गए हैं- कक्षा में सीखने का वातावरण, पाठ योजना और प्रस्तुतीकरण, भाषा शिक्षण- अधिगम प्रक्रियाएँ, गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ, और शिक्षकों एवं बच्चों की कक्षा गतिविधियों के लिए समय विभाजन। यह एफएलएन के कुछ पहलुओं और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास पर उनकी धारणाएँ भी प्रस्तुत करता है।

कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं और शिक्षा प्रणाली स्तरीय परिवर्तन के लिए प्राथमिकताएँ

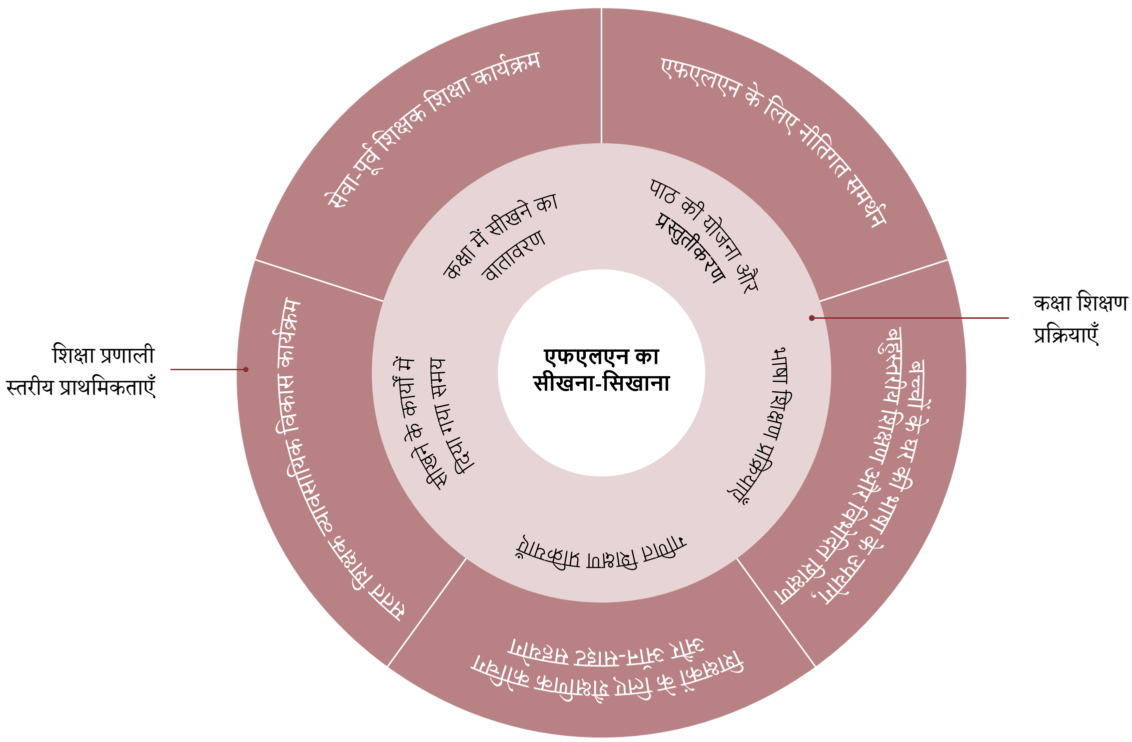

इस रिपोर्ट में दो प्रकार की अनुशंसाएँ शामिल हैं:

- कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं को सशक्त करने के लिए अनुशंसाएँ जो सीधे तौर पर सर्वे के मुख्य निष्कर्षों पर आधारित हैं। इन्हें अगले खंड में कक्षा-स्तरीय निष्कर्षों के साथ दिया गया है।
- शिक्षा प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन संबंधी अनुशंसाएँ जो प्रभावी शिक्षण प्रक्रियाओं को लागू करने और उनके स्थायित्व में मदद करेंगीं। इन अनुशंसाओं को कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं से संबंधित अनुशंसाओं के बाद के खंड में प्रस्तुत किया गया है।

कक्षा शिक्षण प्रक्रियाओं के लिए निष्कर्ष और अनुशंसाएँ

कक्षा में सीखने का वातावरण

सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- कक्षा का भौतिक वातावरण, शिक्षक और बच्चों के संबंध, बच्चों को भागीदारी के अवसर, और बच्चों की घर की भाषा का उपयोग।

मुख्य निष्कर्ष

अवलोकित कक्षाओं में से आधे से अधिक (59%) कक्षाओं में प्रिंट-समृद्ध सामग्री प्रदर्शित की गई थी। इनमें से 47% कक्षाओं में इन्हें बच्चों की आँखों के स्तर पर प्रदर्शित किया गया था।

90% कक्षाओं में बैठने की व्यवस्था पंक्तिबद्ध थी। बहुत कम कक्षाओं में शिक्षण के दौरान गतिविधियों के अनुरूप बैठने की व्यवस्था परिवर्तित की गई थी।

लगभग एक-चौथाई (26%) कक्षाओं में बच्चे सहज दिखाई दिए। वे खुलकर अपनी बात रख रहे थे और शिक्षकों से बेझिझक संवाद कर रहे थे।

28% कक्षाओं में शिक्षकों ने विभिन्न बच्चों से अलग-अलग प्रश्न पूछते हुए उन्हें बातचीत में शामिल किया। बहुत कम शिक्षकों ने नियमित रूप से बच्चों को सोचने और उत्तर देने के लिए पर्याप्त समय दिया।

सर्वे में शामिल शिक्षकों ने बताया कि बच्चे कई अलग-अलग घरेलू भाषाओं और बोलियों का उपयोग करते हैं। 81% शिक्षक बच्चों की घर की भाषा के बारे में जानते थे।

अनुशंसाएँ

यह सुनिश्चित करना जरुरी है कि प्रिंट-समृद्ध सामग्री को सोच-समझकर प्रदर्शित किया जाए और शिक्षण के दौरान इसका सक्रिय और सार्थक रूप से उपयोग किया जाए ताकि सीखने में सहयोग मिल सके।

शिक्षकों को छात्रों के बैठने की लचीली व्यवस्था और समूह बनाकर पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ताकि बच्चों में पारस्परिक विचार विमर्श और सहयोग को बढ़ावा मिले।

प्रारंभिक कक्षाओं में शिक्षक और बच्चों के संबंध को मजबूत करने की तुरंत आवश्यकता है, ताकि बच्चे अधिक आत्मविश्वासी बन सकें, चर्चा में भाग ले सकें और सीखने की प्रक्रिया में सार्थक रूप से जुड़ सकें।

बच्चों के घर की या सबसे परिचित भाषा का नियमित और सोच-समझकर उपयोग करना बच्चों के आत्मविश्वास, भागीदारी और समझ बढ़ाने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

पाठ योजना और प्रस्तुतीकरण

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- शिक्षकों द्वारा बच्चों को स्पष्ट निर्देश देना, बच्चों के स्वतंत्र कार्य का अवलोकन और मॉनिटरिंग करना, लेखन कार्यों पर फीडबैक देना, समझ की जाँच के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग और कक्षा में सीखने के विभिन्न स्तरों के अनुसार विभेदीकृत शिक्षण (डिफरेंशिएटेड इंस्ट्रक्शन) का उपयोग करना।

मुख्य निष्कर्ष

साक्षात्कार के दौरान लगभग तीन-चौथाई (73%) शिक्षकों ने बताया कि वे पाठ-योजना तैयार करते हैं।

लगभग दो-तिहाई (61%) कक्षाओं में शिक्षकों ने किसी गतिविधि से पहले या उसके दौरान निर्देश दिए। बहुत कम शिक्षकों ने सुनिश्चित किया कि बच्चों ने उनके निर्देशों को समझा था।

लगभग एक-चौथाई (27%) कक्षाओं में शिक्षकों ने सामूहिक और व्यक्तिगत कार्यों के दौरान बच्चों का अवलोकन, मॉनिटरिंग एवं सहयोग का कार्य किया।

23% शिक्षकों ने बच्चों के लिखित कार्य की जाँच की और त्रुटियों की पहचान की। सुधार करने के लिए सार्थक फीडबैक या मार्गदर्शन बहुत कम शिक्षकों ने दिया।

अनुशंसाएँ

नियमित और उद्देश्यपूर्ण अवलोकन के माध्यम से शिक्षकों को बच्चों की त्रुटियों की पहचान करना, शिक्षण को समायोजित करना और समय पर बच्चों की मदद करनी चाहिए।

बच्चों के काम की नियमित जाँच, गलतियों की स्पष्ट पहचान और सुधार के लिए सरल उपायों के माध्यम से फीडबैक की प्रक्रिया को मजबूत करना आवश्यक है।

पाठों के दौरान बच्चों की समझ की जाँच के लिए सरल और विविध तरीकों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि प्रत्येक बच्चे से उनकी सोच को समझाने के लिए कहना या बच्चों को अपनी सीख प्रदर्शित करने के लिए एक छोटा सा कार्य देना।

आधे से अधिक शिक्षकों (59%) ने बच्चों की समझ की जाँच के लिए समवेत प्रतिक्रिया (कोरल रिस्पॉन्स) पर भरोसा किया। इससे यह स्पष्ट नहीं हो पाता कि बच्चे ने व्यक्तिगत रूप से वास्तव में क्या सीखा है।

अधिकांश (85%) कक्षाओं में शिक्षकों ने बच्चों के सीखने के स्तर के अनुरूप पढ़ाते समय किसी प्रकार की विभेदीकृत शिक्षण (डिफरेंशिएटेड इंस्ट्रक्शन) रणनीति का उपयोग नहीं किया।

सभी बच्चों को सहयोग प्रदान करने के लिए शिक्षकों को स्पष्ट रणनीतियों का उपयोग करना चाहिए, जैसे कि लचीले समूह बनाना, स्तर-आधारित समूहों में मार्गदर्शित अभ्यास कराना और नियमित पाठों के दौरान सहायक कार्य (स्कैफोल्डेड टास्क) देना।

उचित पहचान के बाद, सीखने में कठिनाई का सामना कर रहे बच्चों को अतिरिक्त ध्यान और सहायता प्रदान करना आवश्यक है।

भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- चर्चा के दौरान बच्चों के पूर्व ज्ञान का उपयोग, खुले छोर वाले प्रश्न पूछना, डिकोडिंग सिखाने के लिए अलग-अलग रणनीतियों का उपयोग, पढ़कर सुनाते (रीड अलाउड) समय समझ आधारित रणनीतियों का उपयोग, बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के मौके देना, तथा अभिव्यक्तिपूर्ण लेखन के लिए स्पष्ट संकेत प्रदान करना।

मुख्य निष्कर्ष

मौखिक भाषा विकास संबंधी गतिविधियों के दौरान बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल करना और खुले छोर वाले प्रश्नों का उपयोग बहुत सीमित था। इससे बच्चों को सोच-विचार करने और स्वयं को अभिव्यक्त करने का बहुत कम अवसर मिला।

डिकोडिंग का शिक्षण व्यवस्थित नहीं था। यह या तो केवल अक्षर या शब्द लिखने पर आधारित था अथवा ध्वनि-प्रतीक संबंध और शब्द जोड़ने (ब्लेंडिंग) को सुदृढ़ करने के लिए केवल एक ही गतिविधि पर आधारित था।

आधे से अधिक कक्षाओं (55%) में बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने का अभ्यास करने का अवसर मिला। बहुत कम शिक्षकों ने इस दौरान बच्चों को मार्गदर्शन और सहयोग प्रदान किया।

तीन-चौथाई से अधिक (79%) शिक्षकों ने इस प्रकार का लेखन कार्य दिया, जिसमें बच्चों को ब्लैकबोर्ड या पाठ्यपुस्तक से नकल करना या केवल अक्षर और शब्द लिखना शामिल था।

अनुशंसाएँ

मौखिक भाषा की गतिविधियों में बच्चों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके लिए जरुरी है कि विषयों और चर्चाओं को संदर्भों और अनुभवों से जोड़ा जाए। बच्चों से अनुमान लगाने, सोचने और निष्कर्ष निकालने के लिए कहा जाए। और इसके साथ ही उन्हें खुले छोर वाले प्रश्नों के उत्तर में खुलकर बोलने का अवसर प्रदान किया जाए।

डिकोडिंग को अधिक व्यवस्थित तरीके से सिखाने की आवश्यकता है। इसमें ऐसी कई गतिविधियाँ शामिल होनी चाहिए, जो ध्वनि और अक्षर के संबंध को अलग-अलग तरीकों से मजबूत करें। इसमें सरल शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग भी शामिल है।

बच्चों को शिक्षक के मार्गदर्शन में छोटे समूहों या जोड़ों में और साथ ही स्वतंत्र रूप से पढ़ने के लिए पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए।

लेखन गतिविधियाँ केवल देखकर लिखने तक सीमित नहीं रहें इसके लिए बच्चों को स्वयं सोचकर लिखने तथा विचारों और भावनाओं को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए सार्थक अवसर दिया जाना चाहिए।

गणित शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ

इसके अंतर्गत सर्वे में निम्न पहलुओं का अध्ययन किया गया था- शिक्षकों और बच्चों द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का उपयोग करना, गणित के कार्यों को बच्चों को स्वतंत्र रूप से करने के अवसर प्रदान करना, गणितीय

अवधारणाओं को स्पष्ट करने के लिए बच्चों के वास्तविक-जीवन के अनुभवों का उपयोग करना तथा शिक्षकों द्वारा 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्नों का उपयोग करना।

मुख्य निष्कर्ष

अवलोकित कक्षाओं में आधे से अधिक (51%) शिक्षकों के द्वारा टीएलएम का उपयोग किया गया था। बहुत कम शिक्षकों ने प्रभावी तरीके से उसका उपयोग किया।

लगभग एक-तिहाई (38%) कक्षाओं में बच्चों को टीएलएम का उपयोग करने के मौके मिले।

अधिकांश शिक्षकों (91%) ने गणितीय अवधारणाओं और प्रक्रियाओं को समझाने के लिए वास्तविक-जीवन के उदाहरणों का उपयोग नहीं किया या कभी-कभार किया गया।

आधे से अधिक (56%) कक्षाओं में बच्चों को स्वतंत्र रूप से अभ्यास करने के अवसर दिए गए। बहुत कम कक्षाओं में शिक्षकों ने बच्चों के कार्य का अवलोकन किया और उनके काम में सुधार के लिए फीडबैक दिया।

लगभग एक-चौथाई शिक्षकों (23%) ने गणित शिक्षण के दौरान 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न पूछे।

अनुशंसाएँ

शिक्षकों द्वारा शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) का अधिकाधिक, नियमित और बाल-केंद्रित तरीके से उपयोग करने की अत्यंत आवश्यकता है। यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि किसी और को करते हुए देखने के बजाय बच्चों को स्वयं करके देखने और अवधारणाओं को समझने के पर्याप्त अवसर मिलें।

गणितीय अवधारणाओं को सिखाते और उनका अभ्यास कराते समय परिचित और बच्चों के वास्तविक जीवन के अनुभवों को शामिल किया जाना चाहिए। इससे बच्चे दैनिक जीवन में गणित की प्रासंगिकता समझने और व्यावहारिक समस्या-समाधान के कौशल विकसित कर सकेंगे।

स्वतंत्र अभ्यास के दौरान, शिक्षकों को बच्चों के काम की सक्रिय रूप से मॉनिटरिंग करनी चाहिए और समय पर मार्गदर्शन और फीडबैक देना चाहिए ताकि अभ्यास यांत्रिक दोहराव तक सीमित ना रहे बल्कि अवधारणात्मक समझ और प्रक्रियात्मक प्रवाह (प्रोसीजरल फ्लुएंसी) को मजबूत करे।

शिक्षकों को 'क्यों और कैसे' वाले प्रश्न पूछने चाहिए। इससे बच्चे अपने विचारों को स्पष्ट करने, अपने उत्तरों के लिए तर्क देने और अपनी रणनीतियों पर चिंतन करने में सक्षम हो पाएँगे। इससे बच्चों में रटने पर आधारित सीखने को बढ़ावा देने के बजाये गहरी समझ और तार्किक सोच विकसित होगी।

सीखने के कार्यों पर समय

सर्वे के दौरान विभिन्न कक्षा गतिविधियों में शिक्षकों और बच्चों द्वारा बिताए गए समय पर भी ध्यान दिया गया था।

मुख्य निष्कर्ष

बच्चे कुल कक्षा समय के 26% समय के दौरान 'सीखने के कार्य में शामिल नहीं' (ऑफ-टास्क) रहे। जब बच्चे 'सीखने के कार्य में शामिल' (ऑन-टास्क) थे, तो भी उनका अधिकांश समय यांत्रिक या दोहरान वाले कार्यों में ही व्यतीत हुआ।

शिक्षकों का दो-तिहाई से अधिक समय (67%) शिक्षक-केंद्रित गतिविधियों में व्यतीत हुआ।

अनुशंसाएँ

शिक्षकों को सीखने की प्रक्रिया में बच्चों की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के लिए शिक्षक-केंद्रित शिक्षण और बाल-केंद्रित अभ्यास के बीच बेहतर संतुलन बनाने की आवश्यकता है।

साथ ही, शिक्षकों को स्वतंत्र तथा समूह आधारित कार्यों की योजना अधिक सोच-समझकर बनानी चाहिए और उनका प्रभावी प्रबंधन करना चाहिए, विशेष रूप से बहु-कक्षा शिक्षण परिस्थितियों में, जहाँ शिक्षक का ध्यान बँटा हुआ रहता है।

अन्य निष्कर्ष

> शिक्षकों में एफएलएन लक्ष्यों और अधिगम प्रतिफलों के प्रति गहरी जागरूकता पाई गई थी।

> 98% शिक्षकों ने बताया कि उन्होंने पिछले एक साल में एफएलएन पर आधारित प्रशिक्षण में भाग लिया है।

> लगभग दो-तिहाई (63%) शिक्षकों ने बताया कि उन्हें नियमित रूप से अकादमिक सहयोग प्राप्त होता है। इनमे से अधिकांश (96%) शिक्षकों ने अकादमिक सहयोग को उपयोगी माना।

> 46% शिक्षकों ने बताया कि खंड स्तरीय अकादमिक सहयोग करने वाले कार्मिकों ने शिक्षकों को मार्गदर्शन देने की रणनीति के रूप में कुछ नियमितता के साथ शिक्षण प्रक्रियाओं का प्रदर्शन (डेमोंस्ट्रेशन) किया।

शिक्षा प्रणाली के स्तर पर परिवर्तन के लिए अनुशंसाएँ

एफएलएन के लिए नीतिगत समर्थन को जारी रखें और उसका विस्तार करें

यह अत्यंत आवश्यक है कि एफएलएन के लिए नीतिगत समर्थन वर्तमान निपुण भारत मिशन समय-सीमा से आगे भी जारी रहे, अर्थात 2026–27 तक। जबकि कक्षा 1 और 2 प्राथमिक फोकस बने रहें, नीति और कार्यक्रम का ध्यान आधारभूत कौशलों के सुदृढ़ीकरण हेतु कक्षा 3 से 5 (एनईपी 2020 के अनुसार प्रारंभिक अवस्था) तक विस्तारित होना चाहिए ताकि समय के साथ अधिगम अंतराल बढ़ने से रोका जा सके।

जैसे-जैसे यह समर्थन विस्तारित हो, आधारभूत अधिगम की परिकल्पना का विस्तार करना भी आवश्यक है ताकि इसमें समालोचनात्मक चिंतन, भाषा के लिए सशक्त मौखिक अभिव्यक्ति और स्वतंत्र लेखन, तथा गणित के लिए समस्या-समाधान और तार्किकता को शामिल किया जा सके। ऐसा परिवर्तन आवश्यक है जिससे कक्षा प्रक्रियाएँ यांत्रिक कौशल अर्जन से आगे बढ़कर वास्तविक जीवन स्थितियों में सार्थक अनुप्रयोग की दिशा में अग्रसर हों।

बच्चों के घर की भाषा के उपयोग, बहुस्तरीय शिक्षण और विभेदीकृत शिक्षण को एक व्यवस्थित तरीके से संबोधित करें

सर्वेक्षण निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि तीन महत्वपूर्ण कक्षा चुनौतियों पर विशेष और सतत ध्यान देने की आवश्यकता है। इन चुनौतियों के समाधान हेतु विशिष्ट और व्यवस्थित कार्यक्रमगत समर्थन की आवश्यकता है, केवल सामान्य सुझावों या अल्पकालिक प्रशिक्षण प्रयासों की नहीं।

घर की भाषा का उपयोग

आधारभूत अधिगम के लिए ऐसी व्यवस्थित बहुभाषी प्रक्रियाओं को विकसित और समर्थन देने की अत्यंत आवश्यकता है जो स्थानीय समुदायों की भाषाई वास्तविकताओं के अनुरूप हों। इसके लिए केवल शिक्षकों को जहाँ संभव हो घर की भाषा के उपयोग हेतु प्रोत्साहित करना पर्याप्त नहीं है। राज्यों को आधारभूत वर्षों में शिक्षण और अधिगम के लिए बच्चों की घर की भाषाओं को औपचारिक रूप से शामिल करने हेतु स्पष्ट पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय रूपरेखाएँ विकसित

करनी चाहिए, जिन्हें उच्च-गुणवत्ता वाली बहुभाषी सामग्री और आकलनों का समर्थन प्राप्त हो। बहुभाषी शिक्षणशास्त्र को सेवा-पूर्व और सेवा-कालीन शिक्षक शिक्षा में समाहित किए जाने की आवश्यकता है, ताकि शिक्षक सुदृढ़ सैद्धांतिक ज्ञान और कक्षा उपयोग हेतु ठोस रणनीतियों से सुसज्जित हों।

बहुस्तरीय शिक्षण

सरकारी विद्यालयों में बहुकक्षीय शिक्षण और बहुस्तरीय कक्षाएँ एक व्यापक वास्तविकता है, जहाँ सर्वेक्षण नमूने में दो-तिहाई से अधिक कक्षाएँ इस श्रेणी में आती हैं। इसके बावजूद, अधिकांश पाठ्यचर्या, शिक्षक मार्गदर्शिकाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम अब भी एकल-स्तरीय और एकभाषी कक्षाओं को मानकर चलते हैं। बहुस्तरीय परिस्थितियों में कार्यरत शिक्षकों को कई समूहों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने हेतु विशिष्ट पाठ्यचर्या मार्गदर्शन और शिक्षण उपकरणों की आवश्यकता होती है। इसमें समानांतर गतिविधियों की योजना बनाना, स्वतंत्र कार्य का संगठन, लचीले समूह बनाना तथा विभिन्न स्तरों पर शिक्षण को प्रबंधित करना शामिल है।

विभेदीकृत शिक्षण

विभेदीकृत शिक्षण के लिए प्रणाली-स्तरीय प्रयासों की आवश्यकता है ताकि शिक्षक बच्चों के अधिगम स्तरों को समझ सकें, लक्षित सहयोग हेतु उपकरणों को पहचान सकें और सरल विभेदन रणनीतियों का उपयोग कर सकें, जैसे-लचीला समूह निर्माण, सहायक कार्य तथा छोटे समूहों के लिए निर्देशित अभ्यास, विशेष रूप से उन बच्चों के लिए जो अधिगम में संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे बच्चों पर अतिरिक्त ध्यान और सहयोग देना कक्षा के भीतर अधिगम अंतराल को कम करने की कुंजी है। शिक्षक मार्गदर्शिकाएँ, प्रशिक्षण मॉड्यूल और शैक्षणिक सहयोग प्रणालियाँ स्पष्ट रूप से यह मॉडल प्रस्तुत करें कि दैनिक कक्षा प्रक्रियाओं के भीतर विभेदन की योजना कैसे बनाई जाए और उसे कैसे लागू किया जाए।

शिक्षकों के लिए शैक्षणिक कोचिंग और ऑन-साइट सहयोग को सुदृढ़ करें

नियमित कक्षा भ्रमणों के माध्यम से ऑन-साइट शैक्षणिक कोचिंग को सुदृढ़ करने की अत्यंत आवश्यकता है, जिसे एआरपी, सीआरसी या समान भूमिकाओं द्वारा संचालित किया जा सकता है। इन भ्रमणों का फोकस कक्षा प्रक्रियाओं का अवलोकन करने, प्रभावी रणनीतियों का प्रदर्शन करने और शिक्षकों की वास्तविक कक्षा परिस्थितियों के अनुरूप ठोस एवं क्रियाशील प्रतिपुष्टि प्रदान करने पर होना चाहिए।

मध्य-स्तरीय शैक्षणिक कार्यकर्ताओं को अत्यधिक गैर-शैक्षणिक जिम्मेदारियों से मुक्त किया जाना चाहिए ताकि वे शिक्षण-संबंधी सहयोग पर ध्यान केंद्रित कर सकें। उन्हें एफएलएन अवधारणाओं, प्रभावी अधिगम को समर्थन देने वाले शिक्षणशास्त्र तथा सहयोगात्मक पर्यवेक्षण के सिद्धांतों की मजबूत समझ विकसित करने हेतु लक्षित तकनीकी प्रशिक्षण की भी आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त, क्लस्टर-स्तरीय बैठकों को केवल प्रशासनिक आयोजनों के बजाय संरचित शैक्षणिक मंचों के रूप में पुनः उन्मुख किया जाना चाहिए।

सतत शिक्षक व्यावसायिक विकास की एक सुसंगत और व्यवहार-केंद्रित प्रणाली विकसित करें

सेवा-कालीन शिक्षक प्रशिक्षण को सीपीडी के रूप में पुनः परिकल्पित करने की आवश्यकता है, जो अधिगम के लिए अनेक मार्ग प्रदान करे, जिनमें संरचित पाठ्यक्रम, मिश्रित और ऑनलाइन कार्यक्रम, प्रत्यक्ष कार्यशालाएँ तथा सरल डिजिटल सहयोग जैसे व्हाट्सएप नजेस और लघु, ऑन-डिमांड अधिगम संसाधन शामिल हों।

राज्य-नेतृत्व वाले प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भी गुणवत्ता के ह्रास को रोकने हेतु महत्वपूर्ण सुधारों की आवश्यकता है, जो चरणबद्ध क्रियान्वयन के दौरान होता है। इसमें सुविधा प्रदाताओं की बेहतर तैयारी, प्रशिक्षण चरणों के बीच कम अंतराल तथा प्रशिक्षण की मंशा को बनाए रखने हेतु बेहतर निगरानी और प्रतिपुष्टि सुनिश्चित करना शामिल है। सहकर्मी अधिगम और व्यवहार समुदायों को एक प्रमुख सीपीडी रणनीति के रूप में सुदृढ़ किया जाना चाहिए।

सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में एफएलएन फोकस का एकीकरण

सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में संशोधन की आवश्यकता है ताकि प्रारंभिक भाषा और संख्यात्मकता अधिगम, खेल-आधारित शिक्षणशास्त्र, भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता वाली परिस्थितियों में शिक्षण, तथा व्यावहारिक बहुस्तरीय शिक्षण रणनीतियों पर स्पष्ट फोकस शामिल किया जा सके। सर्वेक्षण निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि बच्चों के साथ सम्मानजनक शिक्षक-बाल संबंध, बच्चों की सहभागिता को प्रोत्साहित करना, स्पष्ट निर्देश देना और अधिगम हेतु प्रतिपुष्टि की निगरानी जैसी मूलभूत शिक्षण प्रक्रियाएँ या तो कमजोर हैं या असंगत रूप से लागू की जाती हैं, अतः शिक्षक शिक्षा में इन पर स्पष्ट बल दिए जाने की आवश्यकता है। व्याख्यान-आधारित शिक्षण से व्यवहार-उन्मुख और अनुभव-आधारित शिक्षक तैयारी की ओर बढ़ने की अत्यंत आवश्यकता है। संरचित मार्गदर्शन, कक्षा अवलोकन और छात्र-शिक्षकों को प्रतिपुष्टि प्रदान करने के माध्यम से इंटर्नशिप को सुदृढ़ करने से वे प्रारंभ से ही आधारभूत अधिगम को समर्थन देने हेतु बेहतर रूप से तैयार हो सकेंगे।

टीएलपीएस 2025 के बारे में

टीएलपीएस 2025 द्वारा कक्षा 1 और 2 में भाषा और गणित के शिक्षण-अधिगम के तरीकों पर व्यापक स्तर के व्यवस्थित साक्ष्य प्रस्तुत किए गए हैं। यह सर्वे नवंबर 2024 से मार्च 2025 के बीच नौ राज्यों—असम, छत्तीसगढ़, हरियाणा, झारखण्ड, महाराष्ट्र, मेघालय, राजस्थान, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश—में किया गया था। इसमें 21 जिले और 1,050 कक्षाएँ शामिल थीं। अलग-अलग शैक्षिक सन्दर्भों को शामिल करते हुए, टीएलपीएस बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफएलएन) के लिए वर्तमान शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं की एक स्पष्ट और समग्र तस्वीर प्रस्तुत करता है।

टीएलपीएस 2025 लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन के नेतृत्व में और टाटा ट्रस्ट के सहयोग से विभिन्न संस्थाओं के समूह द्वारा क्रियान्वित किया गया था। अध्ययन में शामिल संस्थाएँ हैं- सेंटर फॉर माइक्रो फाइनेंस (सीएमएफ), मधी फाउंडेशन, क्वालिटी एजुकेशन सपोर्ट ट्रस्ट (क्वेस्ट), विक्रमशिला एजुकेशन रिसोर्स सोसाइटी और एजुकेशनल इनिशिएटिव्स (ईआई)।

टीएलपीएस 2025 रिपोर्ट में प्रस्तुत निष्कर्ष कक्षा में सीखने-सिखाने के माहौल, पाठ योजना और उसके प्रस्तुतीकरण, भाषा और गणित शिक्षण के लिए कुछ चुनी गई शिक्षण प्रक्रियाओं, तथा शिक्षक और बच्चों की विभिन्न गतिविधियों में लगने वाले समय का वर्णन और विश्लेषण करते हैं। यह रिपोर्ट एफएलएन के कुछ पहलुओं और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के बारे में शिक्षकों की धारणाओं के बारे में भी बताती है। टीएलपीएस 2025 की सिफारिशें यह बताती हैं कि कक्षा शिक्षण की प्रक्रियाओं को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है। साथ ही ये भी अनुशंसा करती है कि शिक्षा प्रणाली के स्तर पर कौन से सुधार किए जाने चाहिए, जिससे एफएलएन के दौरान शिक्षण-अधिगम के तरीकों में होने वाले बदलावों को संभव और स्थायी बनाया जा सके।

LANGUAGE and LEARNING FOUNDATION
Strong Foundation, Stronger Future

www.languageandlearningfoundation.org
Language and Learning Foundation
@llf_ig
Language and Learning Foundation
LLF_edu
languageandlearningfoundation1193

TLPS 2025 के लिए प्रपत्र और कक्षा-वार डेटा तालिकाएँ ऊपर दिए गए QR कोड से प्राप्त की जा सकती हैं।